International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-02-2019; Accepted: 23-03-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 3; May 2019; Page No. 20-22

नवगीत की वैचारिकता और उपलब्धि

मनीष कुमार तिवारी[1], डॉ. उर्मिला वर्मा[2]
[1] शोध छात्र, हिन्दी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
वैचारिकता की दृष्टि से यदि हम विचार करें तो यह कथ्य स्पष्ट होता है कि कवि की जागरूकता ही, नवगीत की वैचारिकता है। जागरूकता वैचारिकता का प्रथम सोपान है। इस सीढ़ी तक पहुँचकर कवि सधे हुए चौकन्नेपन के साथ अपने जीवन के चारो ओर घटित होने वाले घटनाचक्र की खबर रखते हैं। नवगीतकार ज्ञान को व्यवहार की अग्नि में तपा लेने वाले रचनाकार हैं। गाँधीवाद और मार्क्सवाद की सामाजिक चेतना नवगीतकारों के अन्तर्व्यक्तित्व एवं उसमें विद्यमान कवि व्यक्तित्व की संरचना में सुचिंत रूप से सहायक रहे हैं। इन रचनाकारों ने विभिन्न दृष्टियों से आलोक ग्रहण कर अपनी स्वयं की साहित्यिक जीवन दृष्टि विकसित की है। विश्लेषण की दृष्टि से यदि यह कहा जाय कि नवगीतकार सहज जीवन रस को सर्वोपरि मूल्य के रूप में स्थापित करते हैं, तो यथेष्ठ लगता हैं।

मूल शब्दः नवगीत, वैचारिकता, उपलब्धि।

प्रस्तावना
नवगीत की वैचारिकता एवं उपलब्धि के अनेक आयाम हैं। इन आयामों का जुड़ाव वस्तु जगत् से है, नवगीत रचनाकारों ने गीत को एक नयी स्फूर्ति और ताज़गी प्रदान की हैं। अनुभूति काव्य सत्य कवि की वैचारिकता है। सामाजिक सन्दर्भों में ही नवगीतकार अपने को व्यक्त करता हुआ स्वयं अपनी ही आन्तरिक शक्ति को उपलब्ध करता है। इसे व्यक्ति की आत्मोपलब्धि कहा जाता है। सर्जनात्मकता साधन और आत्मोपलब्धि साध्य है। व्यक्ति की सर्जनात्मकता और आत्मोपलब्धि पूरे समाज की उपलब्धि हुआ करती है। 'नयी कविता' के कवियों में आत्मोपलब्धि का यह गुण बहुत अधिक है।[1] आंचलिकता का बोध वस्तुतः किसी क्षेत्र विशेष के लोक–जीवन का, भौगोलिक सांस्कृतिक परिवेश में एक अध्येता के रूप में देखने के प्रवृत्ति का नाम है। इस दृष्टि से किसी भौगोलिक क्षेत्र–विशेष के लोक–जीवन के सुख–दुःख, जीवन–विधि और लोक गीतों के प्रभाव का ग्रहण करके लिखी गयी कविताओं को 'आंचलिक कविता' कहा जा सकता है। 'नवगीत' में इस बोध की व्यंजना खूब हुई है। नवगीतकार गुलाब सिंह एक ऐसे गीत–हस्ताक्षर हैं।[2]

मूल्य चित्रण
नवगीत के पुरोधा आज इस दुनियाँ में नहीं हैं अर्थात् उनके द्वारा किया गया प्रयास उनकी अनुसूचियों में प्रतिबद्ध है। उनके सुपुत्र श्री राजीव सिंह और उनकी पुत्रवधू डॉ. रोली सिंह से सम्पर्क करने पर नवगीतकारों की सूची जिसमें नवगीतकारों के द्वारा हस्ताक्षरित प्रतिलिपि हस्तगत हुई है।

नवगीतकारों की एक लम्बी सूची जिसमें श्याम सुन्दर घोष, रमेशचन्द्र पन्त, मुरारीलाल शर्मा, उमाशंकर तिवारी, माहेश्वर तिवारी वसुमालवीय, अमरनाथ श्रीवास्तव, गुलाब सिंह, देवेन्द्र कुमार, रामसेंगर, कुमार रवीन्द्र, अनूप अशेष, कौशलेन्द्र प्रताप सिंह, जगदीश अतृप्त, श्रीकृष्ण तिवारी, नईम, सुरेश, विनोद निगम, शम्भुनाथ सिंह का नाम एवं हस्ताक्षर अंकित है। इनके अतिरिक्त जिन नवगीतकारों का नाम छूट गया है उनका जीवन परिवेश, रचना परिवेश आदि का समग्र चिन्तन नवगीत दशक 1, 2, 3 तथा नवगीत अर्द्धशती एवं नवगीत सप्तक में अंकित है।

नवगीत की मूल्यवक्ता कल्पना के इन्द्रिय संवेद्य व्यापार की अनिवार्य परिणति बिम्ब–रचना में होती है। नवगीतकारों ने अपनी कल्पना की इस दिशा को उत्कर्षोन्मुखी बनाया है। इसलिए 'नवगीत' समृद्ध बिम्बों का काव्य है। प्रत्येक नवगीतकार के बिम्बों में मौलिक विशेषता है जो उनके काव्य–शिल्प की मौलिकता का आधार बनती है और हर नवगीतकार की काव्य–सृष्टि में विशिष्टता का समावेश कर उसकी अलग पहचान बनाती है। नवगीत में, कठोर यथार्थ की अभिव्यक्ति का संकल्प, पूरा करने हेतु वस्तुपरक, सार्थक, बिम्बों की सर्जना की गई है। नवगीत में सघन बिम्बों का प्रयोग अधिक हुआ है। प्रतीक मूलक बिम्ब–योजना का प्रयोग माहेश्वर तिवारी के काव्य में विशेष रूप से हुआ है। नवगीत में प्रतीकात्मक बिम्ब बहुत अधिक प्राप्त होते हैं।

शम्भुनाथ सिंह के गीतों में बिम्ब विधान दो स्तरों पर दृष्टिगोचर होता है। प्रथम स्थल पर उन्होंने आंचलिक गीतों में बिम्ब निर्माण प्राकृतिक उपादानों एवं लोक अभिप्रायों से किया है। दूसरे स्तर पर आधुनिक युग–बोध की अभिव्यंजना हेतु गीतों में यथार्थ परिवेश की निर्मिति के लिए आधुनिक वैज्ञानिक जीवन सन्दर्भों के प्रयोग से बिम्ब योजना की है।[3]

अनेक नवगीतकारों के काव्य में बिम्बधर्मिता हेत प्रकृति ने अहम भूमिका निभायी है। अनूप अशेष, उमाशंकर तिवारी आदि के नवगीत उदाहरण स्वरूप देखे जा सकते है। प्रकृति के साक्ष्य में जहाँ नवगीतों में भार्दव आया है वहीं प्रकृति के साथ आधुनिक जीवन के वैज्ञानिक एवं तकनीकी व्यापारों का भी मेल है जो नवगीत का अपना वैशिष्ट्य है।

सूक्ष्म ऐन्द्रिय संवेदनों से युक्त ध्राणमूलक बिम्ब काव्य–चित्र को प्राणवन्त बनाने में समर्थ होते हैं। मानव एवं प्रकृति सम्बन्धित गन्धों का इसमें समावेश होता है। नवगीत में इसके काफी उदाहरण मिलते है। वाहय स्थूल की अपेक्षा अंतर के सूक्ष्म भावों को महत्व देने और विशेष आग्रह के उनके सौन्दर्य–उद्घाटन से अलंकृत बिम्बों की सृष्टि होती है। सभी कवियों के काव्य में अलंकृत बिम्ब समान रूप से प्राप्त होते हैं। व्यक्ति के मनोराज्य से सम्बन्धित ये इन्द्रिय ग्राह्य कम होते हैं किन्तु समग्र प्रभाव डालने में समर्थ होते हैं।[4]

माहेश्वरी तिवारी (हर सिंगार कोई तो हो) –डॉ. शम्भुनाथ सिंह ने अपना अभिमत प्रस्तुत करते हुए कहा है कि – "नवगीत पूर्णतः बिम्ब धर्मी काव्य है, उसकी बुनावट बिम्बों का ताने–बाने से हुई है किन्तु उसके बिम्ब पूर्ववर्ती कविता के समान अलंकृत, अनुकृत, रूढ़ अथवा काल्पनिक नहीं है। उसमें यातों ऐसे प्रतिभा बिम्बों का प्रयोग हुआ है जो पश्यन्ती वाक् के स्तर पर अभिव्यक्त होने के कारण सर्वथा नवीन अछूते और अकल्पनीय है या उसमें अधिकतर यथार्थ जगत् के अनुद्घाटित आयामों के अप्रयुक्त विम्ब प्रयुक्त हुए हैं।[5]

नवगीत की मूल्यपरकता एक जनवादी चेतना है। यही कारण है कि नवगीत ने प्राचीन कविता के शब्द, अर्थ छन्द, लय संगीत तत्व रमणीयता आदि अवयवों को पूरा का पूरा स्वीकार किया। प्रयोजन की दृष्टि से कविता को अस्वस्थ मन की अस्वस्थ अभिव्यक्ति नहीं स्वीकार किया। तुलसी के शब्दों में 'मंगलानांच' में नवगीत का लक्ष्य निर्धारित किया गया। कविता को व्यक्ति से हटाकर लोक जीवन से जोड़ा गया। काव्य में लोक जीवन को गाँव और शहर, सड़क और पर्वत, खान और जंगल, खेत और कारखाना, खलिहान और स्टेशन तात्पर्य यह है कि स्थूल जीवन या भौतिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से कविता को जोड़ा गया, वहाँ से विषय को उठाया गया, नवगीतकारों ने विस्तृत जीवन, लोक परम्परा, लोक संस्कृति, लोकगीत से प्रेरणा ग्रहण की। इसलिए कि "लोकराष्ट्र की आत्मा होता है। हमारे जीवन की मूल निधियाँ, ज्ञान की अनेकानेक प्रतिमाएँ, आचार–विचार की अनेक कथा कहानियाँ, हमारे जीवन्त संस्कृति की अनेक सरल सरस धारा, भाषाओं की अनेक प्रवहमान सरिताएँ सभी लोक में ही सुरक्षित हैं।"[6]

कुमार शिव ने नवगीत की मूल्यवक्ता के सन्दर्भ में अपना वक्तव्य इस प्रकार व्यक्त किया है – "नवगीत ने जहाँ एक ओर नगरीय सभ्यता को आत्मसात् किया, वहीं दूसरी ओर इसकी जड़े लोक–जीवन में भी गहरी चली गई हैं। इसने नगर की यांत्रिकता को तो शब्द दिये ही हैं, साथ ही साथ लोक संस्कृति की गद्य में भी यह आकंठ डूबा हुआ है। यदि पुराना गीत उदास और एकान्तप्रिय था तो नवगीत के चेहरे पर तमतमाहट है, आक्रोश है। उसके तेवर बदले हुए हैं। नवगीत सपाट–बयानी का कायल नहीं है। वह मुँह फट नहीं है, लपेटकर बात कहना जानता है, कुछ न कहकर भी सब कुछ कह देता है।

नवगीत न तो कोई नारा है, न आन्दोलन। यह तो शब्दों का छन्दानुशासित जुलूस है जो नये बिम्बों और प्रतीकों के झण्डे लेकर नये बोध की जमीन पर निरन्तर आगे से आगे बढ़ता जा रहा है, किन्तु नवगीत के सामने खतरें भी हैं। यदि उसमें नयी कविता के समान अनर्गल प्रयोगों की प्रवृत्ति पनपेगी और उसमें तथाकथित नवगीतकार शामिल होकर उसे फैशन परस्त बनाने का प्रयास करेंगे तो उसमें विकृतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। जिस मिट्टी से गीत का जन्म हुआ है यदि उसमें उसकी गन्ध नहीं है, तो फिर वह कैसा गीत? केवल तुकें मिला देना ही गीत के लिए पर्याप्त नहीं है और चौकाने वाले बिम्ब और प्रतीक गीत को बहुत आगे ले जाने वाले नहीं हैं। जब तक गीत पहचाने हुए सहज मानवीय भाव को प्रतिमूर्ति नहीं करेगा तब तक उसकी सफलता में सन्देह हैं।''[7]

नवगीत की मूल्यपरकता को बताते हुए अनूप अशेष ने अपना अभिमत इस प्रकार प्रस्तुत किया है– "आज की वादग्रस्त प्रतिबद्धता के छद्म आपातित मुहावरों वाली कविताओं के बीच नवगीत उसी लोक गंद्य के साथ उपस्थित है। आज जबकि हर नया लिखने वाला नवगीत ही लिखने का यत्न कर रहा है, इस विधा को लेकर समीक्षकों और अनुवादक कवियों में भ्रम है। भ्रम ही नहीं, उनमें इसे लेकर भय भी है। जिस टटकेपन या ताजगी को लेकर ये लोग रचना से अधिक अपनी चर्चा करवा चुके हैं उस पर से पर्दा उधड़ जाने का खतरा इन्हें दिखायी पड़ने लगा है। प्रारम्भ में इन लोगों ने अन्य भाषाओं की कविताओं का छायानुवाद कर अपने को प्रतिष्ठित किया। समझ और देशी–विदेशी भाषाओं का सामीप्य बढ़ने से कुछ भी अन पहचाना नहीं रह गया है। यही कारण रहा है कि नयी कविता के अधिकांश कवियों ने लिखना ही बन्द कर दिया या फिर अन्य विधाओं में घुसपैठ करने लगे।''[8]

अनूप अशेष ने अपने कथ्य के माध्यम से आगे भी नवगीत की मूल्यवक्ता को प्रदर्शित करते हुए बताया कि – "बच्चन के बाद की पीढ़ी में गिरिजा कुमार माथुर, डॉ. शम्भुनाथ सिंह, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, ठाकुर प्रसाद सिंह, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि ने गीतों की संवेदना और भाव कथ्य को नया मोड़ दिया। यहीं से गीत ने नयी कविता के समानान्तर नये बोध, जीवन के नये अनुभव को नयेपन के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया। छठे दशक के बाद से नवगीत अपनी छान्दसिकता, बिम्बात्मकता, शिल्पगत नवीनता में, अधिक खुलकर सामने आया।''

नवगीतकार राम सेंगर ने नवगीत की मूल्यवक्ता के परिप्रेक्ष्य में अपने दृष्टिबोध को इस प्रकार व्यक्त किया है – "अपनी कविता में चमत्कार लाने के लिए स्वानुभूति अथवा भोगे हुए सच को अभिव्यक्त करने के नाम पर कुछ भी बकना मुझे भाषा की मूल प्रकृति और इसके संगीत के साथ या शैली तथा रचनाशिल्प के साथ एक तरह से बलात्कार करना लगता है। मेरी कोशिश हमेशा यही रही है कि भोगी हुई सारी जलालतों तथा जिन्दगी के सारे कटु अनुभवों को जीवन्त मूर्तरूप देकर अपनी सारी संवेदनाओं को मानवीय बिम्ब के रूप में सजीव और सप्राण बना सकूँ।''[9]

राम सेंगर के अनुसार, "कथ्य की दृष्टि से गीत को नया बनाने में जिन दृष्टि–सम्पन्न रचनाकारों के प्रयत्नों से नवगीत–लेखन की एक स्वस्थ परम्परा निर्मित हो रही है, उनके प्रति मेरे मन में एक अटूट विश्वास है। नयी कविता, विचार कविता, अकविता या जनवादी कविता का तुर्रा देकर कविता के नाम पर ठेठ फूहड़ गद्य लिखने की अपेक्षा मैं कहानियाँ या व्यंग्य लिखना ज्यादा बेहतर समझता हूँ। यद्यपि नयी कविता की अपनी संवेदना है– अपना शिल्प है तथापि मैं यह मानता हूँ कि फिर हाल वह सम्पूर्ण बिखराव की स्थिति में है तथा जनता का सामना करने में वह कतराती है। भारतीय जनमानस ने उसे पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया है तथा वह महज कुछेक पत्रिकाओं के सहारे जिन्दा है। मैं गीत के भविष्य के प्रति पूरी तरह से आश्वस्त हूँ तथा मेरा विश्वास है कि एक दिन वह साहित्य की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विधा के रूप में पुनः स्थापित होगा।''[10]

नवगीत के सन्दर्भ में अपना दृष्टिबोध व्यक्त करते हुए ओम प्रभाकर ने इस प्रकार कहा है – "नवगीत के कवि एक ही समय में प्रतिबद्ध और तटस्थ दोनों हैं। इनकी प्रतिबद्धता केवल अपने परिवेश और वास्तविक अनुभूति के प्रति है और ये तटस्थ हैं, काव्य रचना के प्रति किसी भी प्रकार के विशिष्टाग्रह से। वे मतवाद विशेष के प्रति तटस्थ हैं। वे रचना के शिल्प विशेष के प्रति आग्रही नहीं हैं। निजी परिवेश और अनुभूति विशेष के अनुरूप जो भी रचना–रूप हो सकता है, ये कवि उसी का प्रयोग करते हैं। वे काव्य भाषा के रूप विशेष के प्रति तटस्थ हैं। वे स्वयं को परम्परा से कटा हुआ नहीं मानते। परम्परा के श्रेष्ठत्व को स्वीकार करते हुए उसके विद्यमान और परिवर्तित रूप को ये कवि ग्रहण करते हैं। लेकिन ये परम्परावादी नहीं हैं।''[11]

निष्कर्ष

'नवगीत' आज के दौर की एक विशिष्ट काव्य–विधा है, जिसे विकास के शिखर तक पहुँचाने में विभिन अंचलों में फैले देश के प्रतिभा रचनाकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। विशेषतः डॉ. शम्भुनाथ सिंह के जेहादी व्यक्तित्व की इसके विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। डॉ. शम्भुनाथ सिंह ने हिन्दी के

काव्य–पटल पर 'नवगीत' को पूर्णतः प्रतिष्ठित करने के लिए 20वीं शदी के नौवें दशक में जो कार्य किया, वह स्तुत्य एवं सराहनीय है। वे हिन्दी नवगीत के पुरोधा हैं। उन्होंने इस विधा को अपने रचना–कर्म से तो समृद्ध किया ही, उसके घोषणा–पत्र, प्रतिमान निर्धारण, प्रचार–प्रसार एवं समवेत सकलनों के प्रकाशन आदि का सम्पूर्ण दायित्व अपने ऊपर लिया और अपनी सिद्ध सांगठनिक क्षमता के बल पर उसे समकालीन कविता के शीर्ष तक पहुँचा दिया।

नवगीत की दृष्टि जीवन की सम्पूर्णता में है। नवगीत का कवि भारत और भारतीय कवि के रूप में सुविख्यात है। नवगीत में आधुनिक बोध को सायास रूप से अभिव्यक्ति नहीं किया जाता। बल्कि आधुनिकता बोध व्यक्ति और समाज के स्तर पर नवगीतकार के व्यक्तित्व का मूल रचनात्मक तत्व होता है।

सन्दर्भ

1. डॉ. शम्भुनाथ सिंह, जहाँ दर्द नीला है, पृष्ठ 6
2. गुलाब सिंह, 'धूल भरे पाँव 'धर्मयुग', अगस्त, 1984, पृष्ठ 33
3. डॉ. उमाशंकर तिवारी, जहाँ दर्द नीला है, पृष्ठ 94
4. श्रीकृष्ण तिवारी, नवगीत दशक भाग–2, पृष्ठ 108
5. सं. डॉ. शिवनारायण सिंह, पुराकल्प पत्रिका, पृष्ठ 81
6. सं. डॉ. शिवनारायण सिंह, पुराकल्प नवगीत में जनवादी चेतना शीर्षक मोहन लाल तिवारी, पृष्ठ 95
7. सं. डॉ. शम्भुनाथ सिंह, नवगीत दशक–2, पृष्ठ 21–22
8. वही, पृष्ठ 34
9. सं. डॉ. शम्भुनाथ सिंह, नवगीत दशक–2, पृष्ठ 45–46
10. वही, पृष्ठ 46
11. सं. डॉ. शम्भुनाथ सिंह, नवगीत दशक–2, पृष्ठ 57–58